उपसंहार
(क) निष्कर्ष :

आधुनिक भारतीय शिक्षा के इतिहास में रवीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गाँधी का योगदान अग्रणी है। दोनों का व्यक्तित्व बहुआयामी और युगान्तरकारी रहा। टैगोर एक साहित्यकार, नाटककार, कवि, उपन्यासकार, कहानी लेखक, अभिनेता, संगीतकार और बड़े शिक्षाविद के रूप में बड़ी व्यापारिक अर्जित किये, वहाँ महात्मा गाँधी एक श्रेष्ठ दार्शनिक, एक श्रेष्ठ शिक्षाविद, एक महान राजनेता, एक महान राष्ट्रभक्त तथा एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में विश्व में प्रसिद्ध हुए। टैगोर ने जहाँ अपने महान साहित्यिक अवदान के बूते सर्वोच्च विश्व पुरस्कार नोबेल प्राइज से सम्मानित हुए, गाँधी जी वहाँ भारत को स्वतंत्र बनाने-राष्ट्रपति की उपाधि पाई। टैगोर ने जहाँ विश्व प्रसिद्ध उच्च शिक्षा संस्था शास्त्री-निकट्तम की स्थापना कर शिक्षा जगत में अमरता प्राप्त की, महात्मा गाँधी जी वहाँ प्राथमिक शिक्षा की उत्कृष्टकारी बेसिक शिक्षा योजना प्रतिपादित की। टैगोर ने जहाँ अपने मानवतावादी मूल्यादायों के लिए विश्व में अपना स्थान बनाया, वहाँ गाँधी जी सत्य और अहिंसा सरीखे शाश्वत सर्वजन प्रिय मूल्यादायों का सबसे बड़कर समर्पण किया। कहने का आशय यह है कि ये दोनों महामानव आधुनिक भारत के निम्नांतों में शीर्षस्थ थे। दोनों ने आधुनिक भारतीय शिक्षा को आसाधारण अवदान दिया। इसलिए हमने अपने शोध के अध्ययन हेतु इन्हें दोनों महापुरुषों को चुना।

सिद्धान्त-विविध संस्कारित्वीय शिक्षा श्रेष्ठ मानवीय गुणों और उच्च जीवन-आदर्शों को प्रदान नहीं कर सकती। हमारी वर्तमान शिक्षा-प्रणाली इसी प्रकार की है जो भौतिकतावादी प्रवृत्ति की जननी है। भौतिक सुख की प्रेरणा प्रदान करने वाली शिक्षा, व्यक्ति को अनैतिक बनाने में सहयोग प्रदान करती है। आध्यात्मिक ज्ञान से रहित तकनीकी एवं विज्ञान की पक्षर शिक्षा व्यक्ति को श्रेष्ठ मानव बनाने के स्थान पर यंत्रमानव बना देती है। इस प्रकार भौतिकता की चक्राचौथ से चमत्कृत व्यक्ति में प्रेम, सहयोग, दया, न्याय, सहिष्णुता,
उदारता और सत्यभाषण आदि श्रेष्ठ मानवीय गुण लुप्त हो जाते हैं। व्यक्ति येन—केन—प्रकारण धनोपासन को ही जीवन का लक्ष्य बना लेता है। मनुष्य की श्रेष्ठता का मानदंड उच्च विवाह, श्रेष्ठ आचरण, सद्धार्म और नैतिकता न होकर धन हो जाता है जिससे समाज में अराजकता, अनैतिकता, ब्राह्मणिक, संधर्म और वैयक्तिक संकीर्णता प्रवाह हो जाती है। व्यक्ति जीवन के वास्तविक आनन्द से दूर हो जाता है। वस्तुतः आज हमारे राष्ट्र की यही स्थिति है, जो निर्जन ही विविधता है।

शोधार्थिनी की दृष्टि में इसका मुख्य कारण हमारी दृष्टिगत शिक्षा—प्रणाली है। आदिकाल से भारतीय प्रागृह में विकसित शिक्षा, धर्म की सहभागिणी रही है जो श्रेष्ठतम मानवीय गुणों का पिकास करने में सक्षम रही है, किन्तु विदेशी आक्रान्ताओं ने हमारी शिक्षा—प्रणाली को पूर्णतः नष्ट करके हमारे राष्ट्र की ध्वनिपरिवर्तन को परिवर्तित कर दिया। हमारे राष्ट्र में ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेजी साम्राज्य के हितों के अनुरूप कार्यकर्ता उत्पन्न करने हेतु लाइब्रे मैकानले ने जो प्रणाली विकसित की, वही अमोड़ा आज भी विद्यमान है जो कि स्वतंत्र भारत की परिप्रेक्ष्यों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है।

अतः, शोधार्थिनी ने भारतीय शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक विचारों का आधुनिक परिप्रेक्ष्यों में अध्ययन करने का निर्देश किया जिससे कि वर्तमान राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुसार एक स्वस्थ नवीन शिक्षा प्रणाली को विकसित करने में सहयोग प्राप्त हो सके। इसी दृष्टि से शोधार्थिनी ने दो महान भारतीय शिक्षाशास्त्रियों “गुरुदेव रविवर्तन देगोर तथा महात्मा गांधी के शैक्षिक मूल्यादानों एवं विचारों की वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का एक समीक्षात्मक अध्ययन” को अपने शोध का विषय बनाने का निर्देश किया।

वर्तमान शिक्षा—प्रणाली आधुनिक भारतीय परिवेश में अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में पूर्णता असफल है। आध्यात्मिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक चिन्तनयुक्त
शिक्षा के समन्वय से ही राष्ट्र की थनदुरुप्ती प्रगति सम्भव है। शिक्षा में नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश होना, राष्ट्रीय सुख-शान्ति और बहुआयामी विकास के लिए आवश्यक ही नहीं, वरनु अनिवार्य है। यद्यपि कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे राष्ट्र ने कृषि, उद्योग, विकित्सा, संचार, परिवहन, सामाजिक आदि अनेक क्षेत्रों में अत्यधिक प्रगति की है, किन्तु नैतिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्यों में हासु हुआ है।

अनुसार, शोधार्थिनी ने अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप एक समयोपयोगी शिक्षा-प्रणाली विकसित करने हेतु दो महान् भारतीय शिक्षाविदों "रवीन्द्रनाथ ठेगोर तथा महात्मा गांधी के शैक्षिक गुणयोग्य एवं विचारों की वर्तमान शैक्षिक परिस्थिति में प्रसंगिकता का समायात्मक अध्ययन" करने की प्रमुख आवश्यकता का अनुभव किया है।

आज हमारे राष्ट्र को एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की महती अपेक्षा है जो वर्तमान सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं का निदान करने में सहयोग सिद्ध हो सके। साध ही युवा वर्ग में नैतिकता, सच्चारित्रता, आध्यात्मिकता, राष्ट्र-प्रेम आदि गुणों का विकास कर सके। स्वाधीनता के पश्चात हमारी दृष्टि शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के लिए अनेक आयोगों का गठन हुआ। अनेक ऐसे अवसर आये जब हमारे राष्ट्र के वृद्धश्रेणियों ने भी शिक्षा नीति में परिवर्तन करने की मांग की, किन्तु आज तक कोई भी प्रयास वांछनीय दृष्टि से सफल नहीं हो सका है। आज युवा पीढ़ी दिग्गजित, उद्योगी और अनुशासनी है। छात्रों में असंतोष व्याप्त है। इन परिस्थितियों में हमारे राष्ट्र की वर्तमान आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुकूल किस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था उपयुक्त होगी, इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें अपने राष्ट्र के श्रेष्ठ शिक्षा मनीषियों के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना होगा।
गुरुदेव टैगोर ने अपने शैक्षिक विचारों का ‘विश्वभारती’ और गाँधी ने अपने शैक्षिक विचारों को ‘बैसिक शिक्षा योजना’ के माध्यम से मूर्त रूप प्रदान किया। दोनों महापुरुषों ने भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा-प्रणाली विकसित करने का प्रयास किया। अस्तु, इनके मूल्यादाश्तों एवं शैक्षिक विचारों के द्वारा शोधार्थी-ने की दृष्टि में एक नवीन शिक्षा-प्रणाली विकसित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त किया जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य:

शोधार्थी-ने शोध-अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया है—

1. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महात्मा गाँधी के जीवन मूल्यों और उनके आदर्शों का अध्ययन उनके मूल ग्रन्थों तथा उन पर लिखित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा अध्यायics संपन्न अनुसंधानों के आधार पर करना।

2. टैगोर एवं गाँधी के विशेषकर मूल्यादाश्तों मुख्य शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।

3. टैगोर एवं गाँधी के अधारभूत दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।

4. टैगोर एवं गाँधी के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों पर जीवन मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन करना।

5. टैगोर एवं गाँधी के मूल्यादाश्तों और शैक्षिक विचारों का विश्लेषण एवं विवेचन करके उनके शिक्षा के स्वरूपों का स्पष्ट अध्ययन करना।

6. टैगोर एवं गाँधी की शिक्षा समस्याओं संकल्पनाओं उनके मूलभूत मूल्यादाश्तों में साम्य एवं वैषयक का अध्ययन करना।

-269-
7. टेगोर एवं गाँधी के मूलभूत मूल्यादाश्तं एवं शैक्षिक विचारों का विश्लेषण एवं विवेचन करके वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में उन विचारों की संगति एवं उपादेयता पर युक्तिसंगत प्रकाश डालना।

अवधारित इन्हीं उद्देश्यों की परिपूर्ति निमित्त सन्दर्भगत शोध-प्रबंध को परिपूर्तित किया गया है और प्रबंध-वस्तु को पूर्व नियोजित आठ अध्यायों में विवेचित किया गया है।

शोध-अध्ययन की प्रक्रिया - सोपान क्रम:

शोध अध्ययन की प्रक्रिया इस भांति रही है--

प्रबंध के प्रथम अध्याय में उक्त बातों के अतिरिक्त शोध-अध्ययन के महत्व, संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण, सोपानों की व्यवस्था आदि का यथार्थ सा उल्लेख किया गया है।

सोपान : प्रथम- शृंखला

1. सर्वप्रथम शोध अध्ययनी ने में टेगोर और गाँधी के दार्शनिक और शैक्षिक मूल्यों, आदर्शों एवं विचारों पर अब तक लिखे गये ग्रन्थों और शोध कार्यों का सर्वेक्षण किया।

2. तत्पश्चात उनके विचारों को श्रेणीबद्ध करके उन विचारों का वर्गीकरण किया गया है।

3. उनके शैक्षिक मूल्यों, आदर्शों एवं विचारों की पारस्परिक तुलना की गयी है।

4. उपयुक्त विश्लेषण और तुलना के आधार पर वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में उन विचारों-मूल्यादाश्तों का मूल्यांकन किया गया है।

-270-
5. शीक्षिक मूल्यादाशों और विचारों की वर्तमान परिस्थितियों में सामाजिक-नाट्यीक निंयया करने से प्रथमात्मक शोध-आधेयत्री ने अपने दृष्टिकोण को शोध-निष्कर्ष एवं सुझाव के रूप में प्रस्तुत किया है।

टैगॉर शिक्षाशास्त्री के रूप में अपने स्वयं के प्रयास से प्रकट हुए। यह उसके जीवन का आवश्यक परिवर्तन था। उनका सम्बन्ध ऐसे परिवार से था जो सब प्रकार के प्रगतिशील विचारों और कार्यों तथा विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक आन्दोलन का केन्द्र था। उनके परिवार के सदस्यों में प्रायः सभी अच्छी बातों के जानकार थे, जैसे-दर्शन, विज्ञान, संस्कृति, कविता, कला, संगीत, नाटक, लघु-निर्माण, सामाजिक सुझाव, व्यापार, व्यवसाय और आध्यात्मिक अनुभव। टैगॉर में ऐसी तीव्र और विविध ग्रहण शक्ति थी कि उन्होंने इन सभी बातों को बड़ी सरलता से अपना लिया।

उपरोक्त गुणों के साथ-साथ टैगॉर में और भी ऐसे अनेक गुण थे, जिन्होंने उनको आति महान शिक्षाशास्त्री बना दिया। उनकी बुद्धि इतनी तेज थी कि वे बड़ी सरलता से किसी ज्ञान को अपना बना सकते थे। उन्हें विज्ञानों और मानवविज्ञानों का बहुत अच्छा ज्ञान था। उनकी अपेक्षा चुदायी का अधिक बातों में रूचि थी, पर उसमें टैगॉर के समान कलात्मक विषयों में रूचि नहीं थी, जैसे-कविता, उच्च कोटि का दर्शन, संगीत की सूचना बातें और कलाएं। रूसो और फ्रांसेल के समान टैगॉर प्रकृति की शक्ति और गुणों को मानने थे, पर प्रकृति से सम्पर्क रखने और इस सम्पर्क के कारण शिक्षा पर उसके प्रभावों को उन्होंने रूसो और फ्रांसेल के बजाय कहीं अधिक अच्छी तरह समझा। सुगीलचन्द्र सरकार ने लिखा है—"टैगॉर ने शिक्षा को जो योगदान दिया, उनमें पेस्टलॉची और फ्रांसेल के कार्य सम्बन्धित हैं और उनके कार्यों में जो कमियों रह गई थी, उनकी पूर्ण भी है। उदाहरणार्थ, फ्रांसेल की किंग्सरार्टन पद्धति में रहस्यपूर्ण तत्त्व, खेल, नृत्य और रचनात्मक कार्यों का विशेष स्थान है। टैगॉर ने
बताया कि यह पद्धति सफलतापूर्वक तभी कार्य कर सकती है, जब जीवन की कठोर वास्तविकताओं से दूर अति सुन्दर वातावरण का निर्माण किया जाय।’’

गाँधी जी ने राजनीति, समाज सुधार, सत्य और अहिंसा के क्षेत्रों में अति महान सफलताएँ प्राप्त कीं। इसके कारण शिक्षा-सिद्धान्त और व्यवहार को दी जाने वाली उनकी देन बहुत ही कम यदि आती है। वास्तव में शैक्षिक विचारकों में उनका स्थान अति श्रेष्ठ है। उन्होंने अपने जीवन के प्रारम्भ में ही यह अनुभव कर लिया था कि सामाजिक, राजनीतिक, आधिकारिक और नैतिक प्रगति का आधार—‘शिक्षा’ है।

डॉ एमा एसो पेटल का कथन है—गाँधी जी ने उन महान शिक्षकों और उपदेशकों की गौरवपूर्ण मण्डली में अनोखा स्थान प्राप्त किया है, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में नव ज्योति दी है। गृह का कथन था कि पेटलों जी आधुनिक शिक्षा सिद्धान्त और व्यवहार का प्रारम्भिक बिन्दु था। जहाँ तक पारंपरिक शिक्षा का सम्बन्ध है यह बात सत्य हो सकती है। गाँधी जी के शिक्षा—सम्बन्धी विचारों का निष्पक्ष—अध्ययन सिद्ध करता है कि वे पूर्व में शिक्षा—सिद्धांत और व्यवहार के प्रारम्भिक बिन्दु हैं।’’

सौपान: द्वितीय के अन्तर्गत रवीन्द्रनाथ टैगोर का आधारभूत जीवनवृत्त उल्लिखित किया गया है। आधुनिक भारत के शैक्षिक पुनरुत्थान के महान पेगम्बर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म एक अत्यन्त ख्यातिलाभ, सुसम्पन्न, सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत परिवार में 6 मई सन् 1861 को कलकत्ता में हुआ था। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर एक धार्मिक, समाज सुधारक, उदार और विद्वान् व्यक्ति थे। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा ‘अरियन्टल सेमेनरी स्कूल’ में हुई। बाद में उन्होंने ‘नामिल स्कूल’ में शिक्षा प्राप्त की। वैसे घर पर उनके लिए विभिन्न विषयों एवं कला तथा संगीत की शिक्षा के लिए अलग—अलग शिक्षक नियुक्त थे। 1878 में टैगोर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड गये। किन्तु
वहाँ वे बहुत दिनों तक न रह सके और 1880 ई० में स्वदेश लौट आये। सन् 1881 में कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे पुनः इंग्लैंड गये, किन्तु विचार परिवर्तन के कारण वे पुनः स्वदेश लौट आये। सन् 1901 में टैगोर ने बोलपुर के समीप ‘शान्ति निकेतन’ की स्थापना की जो आज ‘विश्वभारती विश्वविद्यालय’ के नाम से प्रसिद्ध है। 1913 ई० में उन्हें उनकी उल्कपूर्ण रचना ‘गीताजीलित’ पर नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1920 से 1930 तक उन्होंने यूरोप, अमेरिका तथा एशिया के विभिन्न देशों का भ्रमण किया तथा अनेक व्याख्यान दिये। सन् 1941 में इस महान व्यक्ति के समाधान बीतते ही शिक्शाशास्त्री की जीवन-तीला समाप्त हो गयी।

सोपान : वृतीय में महान गाँधी का आधारपूर्त जीवनमृत्ता प्रस्तुत किया गया है। संसार के महानतम राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, समाजशुदारक एवं शिक्षाशास्त्री राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद्र गाँधी का जन्म काठियावाड़ के पोरबन्दर नामक शहर पर 2 अक्टूबर 1869 को हुआ था। उनके पिता श्री करमचंद्र गाँधी पोरबन्दर राज्य के दीवान थे। उनकी माता का नाम पुतलीबाई थी। वे एक धार्मिक साधी एवं निष्ठावान नारी थी। गाँधी जी को राजकोट में ही एक विद्यालय में प्रवेश दिला दिया गया। अपने विद्यार्थी जीवन में उन्होंने “श्रवण पितु भक्ति” नामक नाटक पढ़ा, तथा “सत्य हरिश्चन्द्र” नामक नाटक का अभिनय देखा। इन नाटकों का उन पर अभिनेत्री पद्मा और वे भविष्य में सत्य की प्रतिमूर्ति बन गये। सन् 1885 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा श्रीमतीलाल कालेज, भावनगर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रवेश लिया, किन्तु कालेज की शिक्षा में उनका मन नहीं लगा, और वे बैरिस्टर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड चले गये। 1891 में बैरिस्टरी पास करके वे भारत वापस आये किन्तु वहां उन्हें विकालत में सफलता नहीं मिली। सन् 1893 में सेठ अबुदुल्ला की फर्म के एक मुकदमे के समाचार में उन्हें दक्षिण अफ्रीका बुलाया गया। दक्षिण अफ्रीका पहुँचकर गाँधी जी ने भारतीयों की दशा सुधारने-273-
के लिए अहिंसात्मक आन्दोलन चलाया। सन् 1914 में गांधी जी वापस भारत आगये। यहाँ उन्होंने भारतीय राजनीति में प्रवेश किया तथा राष्ट्र को स्वतंत्र करने के लिए उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने भारतीय राजनीति में सत्य और अहिंसा का महत्वपूर्ण एवं अद्वितीय प्रयोग किया। राष्ट्र ने उनके नेतृत्व में 15 अगस्त सन् 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की, किन्तु 30 जनवरी 1948 को वे एक हत्यारे की गोली के शिकार हो गये। देशवासी उनके योगदान को युगो-युगो तक याद सरकारे।

सोपान : चतुर्थ में दोनों दार्शनिकों की दार्शनिक विवादास्त्र के विवेचन की गयी है। गुरुदेव का अपना एक निजी जीवन-दर्शन है, जिसमें मानवता, जनतंत्रवाद, विश्ववाद, उपनिषदवाद; आदर्शवाद, यथार्थवाद एवं प्रयोजनवाद का सुन्दर समन्वय मिलता है। उनका कहना था कि “विरोधी शक्तियों की संगति की स्थापना का नाम ही सृष्टि है और इस संगति में ही सत्य का मूलतं निवास है।” अर्थ: प्रोफो आत्मनन्द मिश्र के शब्दों में ‘सत्य की खोज ही जीवन का दर्शन हो सकता है वही शिक्षा का भी दर्शक होगा और उस दर्शन को अप्रत्याश र करने के लिए समाजवादी वृत्ति आवश्यक होगी।’ टैगोर के दर्शन में यह समस्या विश्वास है। उनके ऊपर अस्थो, पेस्तालोजी, फ्रोबेल तथा जॉनड्रूज़ की स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती है।

टैगोर परम पुरुष में आस्था स्थापित करते थे, और विश्व के सर्वोच्च शक्ति के रूप में उस परम पुरुष ने प्रकट करते थे। उनके लिए परम पुरुष सत्यम, शिवम एवं अत्मात्म का प्रतीक है। अन्तःवादी तथा ब्रह्मावादी होते हुए भी वे सर्वोच्च सत्य को व्यक्तित्व प्रदान करते हैं। एक समय वे परम सत्य को सूक्ष्म मानते हैं तो दूसरे समय वे उसे प्रिय स्थूल एवं सूक्ष्म मानते हैं। वे प्रेम के रहस्य को समझकर उसकी सर्वोच्चता को स्वीकार करते हैं। सृष्टि में सामाजिक है, व्यक्तित्व में भी सामाजिक होना चाहिए।

-274-
टैगोर मानव में आस्था रखते थे। उन्हें उच्च कोटि का मानववादी कहा जा सकता है। एक महाकवि होने के कारण उन्होंने संवेदना एवं खुशी भावों के दमन का परम्परा नहीं दिया है, वरन् व्यक्ति की सभी शक्तियों के सामंजस्यपूर्ण विकास का समर्थन किया है।

राष्ट्रीय सूक्ष्म एवं सामाजिक सुधार में वे गाँवों को प्रमुखताम् स्थान देते थे। राष्ट्र—सेवा का महत्वपूर्ण कार्य ग्राम—सेवा है, किन्तु यह ग्राम—सेवा ग्रामीणों पर कुप्पा के रूप में नहीं होनी चाहिए। सेवा में भी ग्रामीणों को उचित सम्मान दिया जाना चाहिए। टैगोर व्यक्ति के सम्मान एवं उसकी स्वतंत्रता में समर्थन रखते थे। वे मूलतः कवि हैं और काव्य साधना में ही उन्होंने अपनी दर्शनिक अनुभूतियों को व्यक्त किया है।

महात्मा गांधी के दर्शनिक विचार पूर्णः औलिक तथा नवीन नहीं है। इसलिए विशुद्ध रूप में उन्हें दर्शनिक नहीं कहा जा सकता। विभिन्न दर्शनिकों के विचारों तथा धर्मों के सिद्धांतों को एकत्र करके गांधी जी ने उनका एक समन्वित रूप अपनाया और जो कुछ भी उन्हें मिला, उसे अपने जीवन में उतारने का पूरा प्रयास किया। इस सम्बन्ध में गांधी जी के ही विचार उल्लेखनीय है जिसे उन्होंने ‘हरिजन’ में व्यक्त किया था : ‘मैं इस बात का दाया नहीं करता कि मैंने किसी नये सिद्धांत को जन्म दिया है मैंने केवल शाश्वत सत्य को अपने ढंग से जीवन में तथा उससे सम्बन्धित समस्याओं को हल करने में अपनाया है। मेरा सारा दर्शन, यदि उसे दर्शन की संज्ञा दी जाए, उसमें निहित है जो कुछ मैंने कहा है। आप उसे ‘गांधीवाद’ न कहें क्योंकि उसमें ‘बाद’ नहीं है। फिर भी जिस प्रकार दर्शनिक सिद्धांतों के आधार उन्होंने अपने जीवन को ढाला तथा जिस प्रकार उन्होंने विभिन्न दर्शनों तथा धार्मिक सिद्धांतों पर अपना मत व्यक्त किया, उसके आधार पर यह कहना अस्वीकृत न होगी कि विश्व के महान् दर्शनिकों में उनका स्थान है।

-275-
महात्मा गांधी गुप्त-प्रवर्तक महापुरुष थे। उनकी विचारधारा में आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोगवाद तथा यथार्थवाद का समन्वय मिलता है। मानव कल्याण के लिए उन्होंने सभी विचार-धाराओं का संशोधण किया है। गांधी जी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। उनके अनुसार सत्य का व्यापक अर्थ-विचार में सत्य, भाषण में सत्य एवं कार्य सत्य होना चाहिए। वे सत्य को ईश्वर का दूसरा नाम मानते थे। गांधी जी अहिंसा के उपासक थे। उनके अनुसार- “अहिंसा समस्त जीवधारियों के प्रति बुरी भावना का अभाव है, अपनी गतिशील अवस्था में इसका अर्थ जानबूझकर कठ सहना है। अपने क्रिया रूप में यह समस्त जीवधारियों के प्रति अच्छी बुरी भावना है, यह शुद्ध प्रेम है।”

गांधी जी सत्याग्रह पर अत्यधिक आस्था रखते थे। सत्याग्रह का अर्थ है, “न्याय का आयोज” वास्तव में सत्याग्रह का तात्पर्य है सत्य के लिए दूढ़ रहना या सत्य के लिए संघर्ष करना। गांधी जी का ईश्वर में अदृश्य विश्वास था। वे एक ईश्वर में विश्वास करते थे। साथ ही साथ वे मनुष्य में ईश्वरत्व का दर्शान करते थे। गांधी जी सर्वाधिक अर्थतः सभी के विकास के पक्षधर थे। सर्वाधिक को उन्होंने मानवीय विचारधारा बताया है। उनका आर्थिक-विन्यास सामयवाद से प्रभावित था। वे मानव जीवन में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिमित, शरीर श्रम, अस्वाद, अभाव, सर्व धर्म सम भाव, स्वदेशी और अपर्याप्तता निवारण आदि प्रति के पालन पर बल देते थे।

सोपान : पंचम में शैक्षिक विचारधारा के अन्तर्गत गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार और आदर्श प्रस्तुत और समालोचित किये गये हैं। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एक महानुष्ठ शिक्षा शास्त्री थे। उन्होंने शिक्षा के सिद्धांतों की खोज अपने अनुभव से की है। वे एक व्यावहारिक शिक्षाशास्त्री थे। टैगोर प्रचलित शिक्षा के घोर विरोधी थे। उनके शिक्षा दर्शन के आधारभूत शिक्षान्ति निम्नलिखित हैं—

-276-
1. छात्रों में संगीत, अभिनय और चित्रकला की योग्यताओं का विकास किया जाना चाहिए।

2. छात्रों को नगर की गन्दगी से दूर प्रकृति के घनिष्ठ सम्पर्क में रखकर शिक्षा दी जानी चाहिए।

3. शिक्षा राष्ट्रीय होनी चाहिए और उसे भारत के अतीत एवं भविष्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

4. शिक्षा का समुदाय के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिए।

5. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए।

6. शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की मन–जीत शक्तियों का विकास करके उसका सर्वोत्तम और सामजिक पूर्ण विकास होना चाहिए।

7. जनसाधारण को शिक्षा देने के लिए देशी प्राथमिक विद्यालयों को फिर से जीवित किया जाना चाहिए।

8. शिक्षण–विधि का आधार जीवन, प्रकृति और समाज की वास्तविक परिस्थितियों होनी चाहिए।

टैगॉर के शैक्षिक विचारों को शोध–अध्ययनों ने प्रबन्ध में निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत उपयोग किया है–

1. शिक्षा के उद्देश्य
2. पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचार
3. अध्यापक का स्थान
4. छात्र–संकरण
5. शिक्षालय
6. अनुशासन सम्बन्धी विचार

-277-
7. शिक्षण का माध्यम

8. शिक्षण—विधि

9. शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों पर टैगोर के विचार
   (अ) व्यावसायिक शिक्षा
   (ब) जन—शिक्षा
   (स) स्त्री—शिक्षा
   (द) धार्मिक—शिक्षा
   (र) राष्ट्रीयता एवं अन्तरराष्ट्रीयता के विकास के लिए शिक्षा
   (र) मूल्यादर्श-सरार

उपर्युक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर वर्तमान काल के महान भारतीय धार्मिक और शिक्षाशास्त्री थे। उनके शिक्षा—दर्शन का मूल सिद्धांत प्रायेक वस्तु के साथ एकत्र की भावना है। टैगोर प्रकृति के अनन्य उपासक थे। इसलिए वे बालक को ईट गारे की बहारदीवारी की अपेक्षा खुले प्राकृतिक बालवरण में शिक्षा देना चाहते थे। टैगोर मानवता में अदृश्य विश्वास रखते थे। अतः उनके अनुसार शिक्षा का कार्य बालक में मानवता का विकास करना है। उनकी मानवता किसी एक ही राष्ट्र तक सीमित नहीं है। वरन् उसमें समूह विश्व आता है। टैगोर प्राचीन गुरुकुल प्रशासनी में विश्वास रखते थे। उनकी आस्था 'सादा जीवन उच्च विचार' तथा 'ब्रह्मचर्य पालन' के सिद्धांत में है। शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में वे बालक को पूर्ण स्वतंत्रता देने का समर्थन करते हैं। धार्मिक क्षेत्र में उन्होंने कर्म—संसार को महत्व दिया है। शिक्षक के सम्बन्ध में टैगोर का विचार है कि उसे सदा ज्ञान की खोज में लगा रहने वाला तथा अच्छा पथ—प्रदर्शक होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी सबसे बड़ी देन 'विश्वभारती' है जिसमें उनके समस्त शैक्षिक विचारों की झलक दिखलाई पड़ती है।

-278-
सौंपन: यदि महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचार और आदर्श समीक्षात्मक ढंग से पुरस्कारित किये गये हैं। गाँधी जी का आविर्भाव भारतीय इतिहास की एक महानतम घटना है। वह न केवल महान राजनीतिज्ञ, दार्शनिक विचारक, धार्मिक विचारक और श्रेष्ठ समाज सुधारक थे, बल्कि अपने युग के महान शिक्षाशास्त्रज्ञ भी थे। उनके प्रमुख शिक्षा सम्बन्धी सिद्धांत निम्नवत् हैं—

1. सम्पूर्ण राष्ट्र में 7 से 14 वर्ष तक के बालक, बालिकाओं की शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य होनी चाहिए।

2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए।

3. शिक्षा विद्यालयों में समस्त मानवीय गुणों का विकास करने वाली होनी चाहिए।

4. शिक्षा को बालकों को बरोजगारी से एक प्रकार की सुरक्षा देनी चाहिए।

5. शिक्षा को बालक की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों के विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए।

6. शिक्षा को किसी लाभदायक दस्तकारी से प्रारम्भ होनी चाहिए, जो बालक को आर्थिक रूप से स्वाभाविक बना सके।

7. शिक्षा जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में किया जाना चाहिए।

8. साक्षरता को शिक्षा नहीं कहा जा सकता।

9. विद्यालय ऐसा होना चाहिए जहां बालक अनेक प्रकार के प्रयोगों द्वारा नयी—नयी खोजें करता रहे।

10. शिक्षा को उपयोगी नागरिकों का निर्माण करना चाहिए।

-279-
शोधार्थिनी ने टैमोर और गाँधी के शैक्षिक विचारों और मूल्यादान का समग्र रूप से अध्ययन करके उनका विवेचन किया है।

गाँधी जी के शैक्षिक विचारों और मूल्यादान का शोधार्थिनी अपने शोध-प्रबन्ध में निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत किया है।

1. शिक्षा के उद्देश्य
2. पादयक्रम
3. शिक्षक का स्थान
4. छात्र-संकल्पना
5. शिक्षालय
6. अनुशासन
7. शिक्षण का माध्यम
8. शिक्षण -विधि
9. शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों पर गाँधी जी के विचार
   (अ) जन-शिक्षा
   (ब) धर्म-शिक्षा
   (स) स्त्री-शिक्षा
   (द) सह-शिक्षा
   (व) राष्ट्रीय-शिक्षा
   (र) मूल्यादार्शियाँ

उपयुक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि गाँधी जी एक जन-सेवक-महामानव के रूप में उच्चकोटि के दार्शनिक और शिक्षाशास्त्री थे। सत्य, अहिंसा, प्रेम, और कर्म ही उनके जीवन-दर्शन का आधार था। उन्होंने

-280-
आजम इन्हीं सिद्धांतों का पालन किया और मानव को संदेश दिया कि इन्हीं सिद्धांतों पर चलने में उसकी बलाई है। गाँधी जी ने मानव जीवन में नैतिकता को भी बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उनके शैक्षिक विचारों में भी इन्हीं तत्त्वों की छाप है। वे शिक्षा को पूर्ण विकास की प्रक्रिया मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वार्थी विकास करना है। गाँधी जी के विचार में शिक्षा का पादयक्रम बालक के जीवन की समस्याओं से सम्बंधित होना चाहिए। शिक्षण-विचार के समबंध में उनका विचार था कि क्रिया द्वारा सीखना और सानुक्षिप्त विद्या से अधिक उपयुक्त हैं वे बालक को कठोर और दमनात्मक अनुशासन में रखने का समर्थन नहीं करते थे। उनके विचार में बालक को अधिक-से-अधिक स्वतंत्रता दी जानी चाहिए जिससे मुक्तात्मक और प्रभावात्मक स्वरूप का अनुशासन स्थापित हो। शिक्षक के समबंध में गाँधी जी की धारणा थी कि उसे मात्र सुधार करने वाला नहीं अपितु एक अच्छा पथ-प्रदर्शक होना चाहिए। जन-शिक्षा, स्त्री-शिक्षा, प्रौढ़-शिक्षा, उच्च-शिक्षा और राष्ट्रीय-शिक्षा के समबंध में गाँधी जी के विचार बड़े ही उदार थे। गाँधी जी के शिक्षा-दर्शन पर आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद और प्रयोजनवाद सभी का कुछ-न-कुछ प्रभाव दिखाई पड़ता है। परन्तु मूल रूप से वे आदर्शवादी विचारधारा से अधिक प्रभावित थे। शिक्षा के क्षेत्र में उनका सबसे बड़ा योगदान ‘बेरसिक-शिक्षा-योजना’ है।

सौपान: सप्तम में सचीननाथ टैगोर एवं महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का गुलनालमक अध्ययन प्रसुत किया गया है। गुरुदेव सचीननाथ टैगोर और महात्मा गाँधी दोनों पृथक-पृथक मार्ग के पथिक होते हुए भी एक ही परम आदर्श जनता के मध्य प्रसारित करना चाहते थे। देश की परतन्त्रता की दशा में जब दरिद्रता और अशिक्षा के कारण भारतीय पशुओं से भी निकृष्ट जीवन का बोझ को दो रहे थे, ऐसे समय में दोनों मनोरितों ने भारत के प्राचीन आदर्श और देवभ को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए लोगों में राष्ट्रीयता की भावना
जागृत किया। टैगोर ने जहाँ सर्वोच्च मानव अथवा परम पुरुष की कल्पना की वहीं गाँधी ने मानव को सच्चा नागरिक बनने की प्रेरणा दी। यद्यपि टैगोर तथा गाँधी दोनों ही मानवतावादी हैं, तथापि शोधकार्य की दृष्टि में दोनों के वृद्धिकोण अलग—अलग हैं। जहाँ टैगोर ने साहित्य सृजन के माध्यम से मानवता की सेवा का बीड़ा उठाया, वहीं गाँधी जी ने समाज सेवा, समाज सुधार और राजनीति के माध्यम से मानवता के कल्याण और राजनीति के माध्यम से मानवता के कल्याण का प्रत लिया।

शोधार्थिनी ने दोनों शिक्षाविदों के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर उनकी तुलना की है—

(अ) शिक्षा का अर्थ—अभिप्राय
(ब) शिक्षा का उद्देश्य
(छ) पादयक्रम
(च) शिक्षण—विधि
(छ) विद्यालय
(ट) अध्यापक का स्थान
(ल) छात्र—संस्थापना
(व) अनुसूचान
(श) मूल्यांकन

टैगोर और गाँधी के विचारों में सामयता:

1. दोनों के शिक्षा—सिद्धांतों में पर्याप्त साम्य है—मातृ—भाषा द्वारा शिक्षा, श्रम का महत्व गांधी की ओर लौटना, पुस्तकों का विस्तार, भारतीय—संस्कृति पर आधारित शिक्षा इसके प्रमाण हैं।

2. दोनों शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य आत्मानुमूर्ति मानने थे।

-282-
3. दोनों ने आत्मनुशासन का समर्थन किया है।

4. दोनों प्राकृतिक, क्रिया-प्रधान, व्यवहारिक, शिक्षा पद्धतियों के समर्थक थे।

5. दोनों ने ग्राम्य-सांस्कृतिक और मानवता के उत्थान के लिए कार्य किया था।

6. दोनों की शिक्षा में सामाजिक पक्ष पर विशेष बल था।

7. दोनों ने व्यक्ति और समाज के समन्वय को माना है।

टैगोर-गाँधी के विचारों और मूल्यादाश्त में अन्तरः

टैगोर और गाँधी दोनों भारत के महान शिक्षाविद रहे। दोनों का अवदान सिरसमयित है। शिक्षा के क्षेत्र में भी दोनों ने महान योगदान किया है। दोनों के शैक्षिक विचारों में, अनेक बातों को लेकर साम्प्रदायिक मिलता है। तथापि दोनों के शैक्षिक विचारों एवं मूल्यादाश्त में भिन्नता के दर्शन भी होते हैं।

टैगोर जहाँ भारतीयता, पाश्चात्य समय, शिक्षा, समाज, राष्ट्रीयता तथा अन्तरराष्ट्रीयता समन्वित शिक्षा के पक्षधर थे, वहीं गाँधी जी व्यवहारिक तथा धार्मिक आधार वाली शिक्षा के हिमायती थे। टैगोर जहाँ विद्यालयों में स्वतंत्र तथा आनन्दमय शैक्षिक वातावरण चाहते थे, गाँधी जी अनुशासनबद्ध शैक्षिक वातावरण के हिमायती थे। टैगोर जहाँ बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास, विश्व नागरिकता का विकास, बालक की चारित्रिक, वैदिक तथा सामाजिक शक्तियों के विकास शिक्षा के अवधारित उद्देश्य मानते थे, गाँधी जी वहीं जीविकोपार्जन, व्यक्तित्व विकास, सांस्कृतिक परम्पराओं की पूर्ति, चरित्र-निर्माण, मोक्ष-प्राप्ति, अन्तर्दोष तथा आत्मानुशीलन की शिक्षा के उद्देश्य अवधारित करते थे। टैगोर जहाँ क्रिया, पाठन विधि, मनोवैज्ञानिक विधि, वस्तु के माध्यम से

-283-
राष्ट्रविद्या, अन्वेषण, हस्तशिल्प, विहरणयुक्त शिक्षण, आनन्दमय वातावरण के निर्माण आदि शिक्षण विधियों के पक्ष में थे। गांधी जी वहाँ क्रिया निरीक्षण, प्रयोग, रचना, खेल, स्वास्थ्य, विनिमय, मनन आदि विधियों के समर्थक थे। टैगोर जहाँ स्थायित्व से मेल वाले पाठ्यक्रम का समर्थन किया, गांधी ने वहाँ धार्मिकता, वास्तविकता, मानवभाषा, शिक्षा समावेश आदि समन्वित पाठ्यक्रम के पक्षधर थे।

स्पष्टतः टैगोर और गांधी इन भिन्नताओं के बावजूद अपने-अपने क्षेत्र में आसाधारण थे। टैगोर ने जहाँ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जानकारी-निकेतन की स्थापना द्वारा अपने शैक्षिक विचारों को मूल्यमूर्त कर शिक्षा को अत्यंत उत्कृष्ट किया, गांधी ने वहाँ प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अपनी बेसिक शिक्षा योजना को प्रतिपादित कर आसाधारण शैक्षिक अवधारणा किया।

सूचना: अद्वैत - वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में टैगोर और गांधी के शैक्षिक धूलाकेश्वरों और विचारों की प्रामाणिकता का वर्णन किया गया है। गुरुदेव रंजोतनाथ टैगोर एक साहित्यकार, कलाकार, दर्शनिक और चित्रकार थे जो अपने काम में महान रहे। उन्होंने 'गुरुदेव' के नाम से 'गुरुदेव' नव-युग की नव-विज्ञान के मूल्यमान पुरुष, साहित्य-निर्माता राजनीतिक महात्मा गांधी के जिन उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ थे, उन्हें ही श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री भी थे।

शोधाधीर्मिनी ने टैगोर और गांधी के शैक्षिक धूलाओं और विचारों की वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में नागरिकता समीक्षा विशेष रूप से टैगोर द्वारा “शान्ति निकेतन में किये गये शैक्षिक प्रयोगों” और गांधी जी द्वारा “बुद्धिमत्ता तत्त्वों के सन्दर्भ में किये शैक्षिक प्रयोग” के आधार पर किया है। यह अवलोकन निम्न विन्दुओं के आधार पर रहा है।

-284-
(अ) टैगोर का शिक्षा में योगदान: मुख्य बिन्दु

1. ‘शास्ति–निकेतन’ में विश्वभारती की स्थापना।
2. शिक्षा में मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन।
3. शिक्षा में प्राकृतिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों का विकास।
4. प्राचीन एवं पाश्चात्य संस्कृतियों में समन्वय।
5. सीमायानुसूची की शिक्षा पर विशेष बल।
6. नैतिक शिक्षा का महत्व।
7. स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा देने पर बल।
8. ग्रामीण शिक्षा की व्यवस्था।

शोधकर्त्री ने गुरुदेव जवीननाथ टैगोर के शिक्षा में उपयुक्त योगदानों के आधार पर उनकी भूमिका एवं उपादेयता की अपने शोध प्रबन्ध में विवेचना की है।

(ब) गांधी जी का शिक्षा में योगदान: मुख्य बिन्दु

1. उद्योग द्वारा शिक्षण का विचार।
2. स्वावलम्बन पर बल।
3. मनोवैज्ञानिक आधार का प्रतिपादन।
4. श्रम का महत्व।
5. क्रिया प्रधान शिक्षा।
6. चतुर्गुणी विकास पर बल।
7. नैतिकता का विकास।
8. मानवभाषा का महत्व।
9. स्त्री शिक्षा पर बल।
10. वर्तमान शिक्षा समस्याओं और दुनियादी तालीम

-285-
इस प्रकार, प्रबन्ध में आधुनिक भारतीय शैक्षिक व्यवस्था पर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों और मूल्यादासों का प्रभाव विश्लेषित है, जो इम्तीज ही आधुनिक भारतीय शैक्षिक व्यवस्था पर गांधी जी के शैक्षिक विचारों और मूल्यादासों का प्रभाव विश्लेषित-विश्लेषित है।

एवंविध, शोधकार्यों ने टैगोर एवं गांधी के शिक्षा में योगदानों और वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर टैगोर और गांधी के शैक्षिक विचारों एवं मूल्यादासों के प्रभावों का यथासम्भव विश्लेषण किया है तथा आधुनिक शिक्षा में उनकी भूमिका और उपादेयता का विवेचन किया है। यथाव्ययक्तता, आंतर: आज की परिस्थिति में उनकी प्रासंगिकता की समीक्षा की गई है।

(ख) सुझाव:

शोध अध्येता ने निर्धारित विषय के अनुसार प्रबन्ध में टैगोर तथा गांधी के शैक्षिक मूल्यादासों एवं विचारों की विवेचना के साथ वर्तमान शैक्षिक परिस्थितियों में उनकी प्रासंगिकता का यथासम्भव विश्लेषण समीक्षात्मक अध्ययन किया है। तथापि अभी भी इन दोनों महान शिक्षाविदों के कल्पनायों अवशेष मनिलो-विषयों पर अध्ययन किये जाने के अवसर शेष हैं। यहाँ नीचे में भावने शोध अध्ययन में सहायक कल्पित विषयों का उल्लेख कर रही हैं:—

1. रवीन्द्रनाथ टैगोर की जीवन-दर्शन और उनकी विश्वभारती का समालोचनात्मक अध्ययन।
2. शिक्षा और साहित्य को रवीन्द्रनाथ टैगोर का अवदान।
3. टैगोर की विश्वभारती का एक परिचयात्मक अनुशीलन और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय उसकी एक तुलना।

-286-
4. महात्मा गाँधी के शैक्षिक मूल्यादाश्तों और विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का समीक्षात्मक अनुशीलन।

5. गाँधी जी की बेसिक शिक्षा योजना की वर्तमान भारत में उपयोगिता का अनुशीलन।

6. महात्मा गाँधी और पंडित मदन मोहन गांधी के शैक्षिक मूल्यादाश्तों एवं विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।

7. चरित्र-निर्माण तथा राष्ट्र भाव जागरण के दृष्टिकोण से टैगोर तथा गाँधी के शैक्षिक मूल्यादाश्तों एवं विचारों की वर्तमान सन्दर्भ में महत्ता।

8. महात्मा गाँधी तथा स्वामी विवेकानन्द के नारी शिक्षा विषयक विचारों का एक समालोचनात्मक अध्ययन।

9. महात्मा गाँधी की बेसिक शिक्षा योजना और वर्तमान भारत की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था का एक तुलनात्मक अध्ययन।

10. एनी बचेंट और महात्मागांधी की शैक्षिक विचारधारा का एक तुलनात्मक विवेचन।

यह एक प्रस्तावित सूची है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक और ऐसे विषय शोध-अध्ययन हेतु चुने जा सकते हैं। टैगोर और गांधी शिक्षा-जगत के किरीटी पुरुष हैं। इनकी प्रासंगिकता, अनेक परिवर्तनों के बाद भी बनी हुई है। आज के अम्बेडकर और लोहियावादी दर्शनों की छाप के बीच भी इनके विचारों की उपेक्षा, मेरे मत से नहीं की जा सकती। इनके विचार चिरकाल तक प्रासंगिक बनी रहेंगी, ऐसा मेरा मानना है।

इति, शुभमस्वत।

-287-